



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,  
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	6. 03. 25	3	4-5

# THE TIMES OF INDIA

## HAU scientists find cotton disease pathotype

Kumar Mukesh | TNN

**Hisar:** Scientists from Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU), Hisar, have identified a new pathotype of a severe disease that impacts the cotton crop. HAU vice-chancellor Prof B R Kamboj said on Wednesday that this is the first time that the pathotype (VCG 0111, Race-1) of fusarium

wilt has been detected in India. He said scientists had already initiated efforts to manage the disease and remain optimistic about finding an effective solution to it. The discovery has received recognition from Elsevier, a Dutch publishing house specialising in scientific, technical, and medical research. Prof Kamboj lauded the research team for the achievement.



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

6. 03. 25

## दैनिक भास्कर

### वैज्ञानिकों ने कपास के उखेड़ा रोग पैथोटाइप को पहचाना

रोग कपास की फसलों के लिए खतरा : डॉ. गर्ग

भास्कर-न्यूज | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने कपास फसल के लिए घातक फ्यूजेरियम विल्ट रोग उखेड़ा रोग के एक नए पैथोटाइप रेस-1 की पहचान की है। देश में पहली बार कपास के उखेड़ा रोग की बीमारी का पता चला है। वैज्ञानिकों ने रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं।

एल्सेवियर एक डच अकादमिक में प्रकाशित फिजियोजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलॉजी में वैज्ञानिकों ने बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन में स्वीकार कर मान्यता दी है। जो विशेषता पौधों की बीमारियों के पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अध्ययन के लिए पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है। एचएयू के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले हैं। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि फ्यूजेरियम विल्ट रोग विश्वभर में कपास की फसलों के लिए गंभीर

बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। वैज्ञानिकों को कपास की बीमारी के प्रकोप पर निगरानी रखनी होगी। वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए।

- प्रो. बीआर काम्बोज,  
कुलपति, एचएयू

खतरा है। पहले यह रोग देसी कपास की फसल में पाया जाता था, लेकिन अब कपास की दोनों फसलों में रोग ने विकराल रूप धारण कर लिया है। उखेड़ा रोग के मुख्य शोधकर्ता डॉ. अनिल कुमार सैनी ने बताया कि शोधकर्ता बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए उपाय विकसित करने में जुटे हैं। वैज्ञानिकों डॉ. रakesh कुमार, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. करमल सिंह, डॉ. सतीश कुमार सैन, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. अनिल जाखड़, डॉ. शिवानी मंधानिया, डॉ. शुभम लाम्बा व पीएचडी छात्र शुभम सैनी ने भी शोधकार्य में योगदान दिया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	6.03.25		

# दैनिक जागरण

## कपास में उखेड़ा रोग के नए पैथोटाइप की पहचान

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विज्ञानियों ने कपास फसल के लिए घातक फ्यूजेरियम विल्ट रोग (उखेड़ा रोग) के एक नए पैथोटाइप (रेस-1) की पहचान की है। देश में पहली बार कपास के उखेड़ा रोग की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के निर्देशानुसार विज्ञानियों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं।

एल्सेवियर एक डच एकेडेमिक पब्लिशर्स कंपनी है जो विज्ञान, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियोलॉजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलोजी में विज्ञानियों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन में स्वीकार कर मान्यता दी है। जो विशेषता पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय विज्ञानी संगठनों में से

• चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि हिसार ने की पहली बार पहचान, डच एकेडेमिक पब्लिशर्स कंपनी एल्सेवियर ने दी मान्यता



एचएयू में कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज वैज्ञानिकों की टीम के साथ • पीआरओ

**कपास की फसलों के लिए यह रोग खतरा : डा. राजबीर :**

अनुसंधान के निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि फ्यूजेरियम विल्ट रोग विश्वभर में कपास की फसलों के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है। पहले यह रोग देसी कपास की फसल में पाया जाता था लेकिन अब देसी व नरमा कपास की दोनों फसलों में इस रोग ने विकराल रूप धारण कर लिया है। यह खोज कपास की खेती की सुरक्षा के लिए निगरानी और मजबूत प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। कृषि विशेषज्ञों ने रोग की सतत निगरानी, संक्रमण-प्रतिरोधी कपास किस्मों के उपयोग और मृदा स्वास्थ्य सुधार तकनीकों को अपनाने की सलाह दी है।

एक है। विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तर पर प्रकाशन करती है। विज्ञानी देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले विज्ञानी हैं।

कपास के उखेड़ा रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्रदान करते हुए प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमर उजाला	6.03.25	2	6-8

## एचएयू के वैज्ञानिकों ने कपास के उखेड़ा रोग के नए पैथोटाइप की पहचान की

अंतरराष्ट्रीय स्तर के एल्सेवियर प्रकाशन ने दी मान्यता, नए रोग के प्रबंधन पर काम शुरू  
माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने कपास फसल के लिए घातक फ्यूजेरियम विल्ट रोग (उखेड़ा रोग) के एक नए पैथोटाइप (रेस-1) की पहचान की है। देश में पहली बार कपास के उखेड़ा रोग की इस बीमारी का पता चला है। वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं।

वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखने वाली डच अकादमी प्रकाशन कंपनी एल्सेवियर में प्रकाशित फिजियोलॉजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलॉजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन में स्वीकार कर मान्यता दी है। पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाले अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है। यह विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन प्रकाशित करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने



एचएयू के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज वैज्ञानिकों की टीम के साथ। स्रोत आयोजक

### अब प्रकोप की निगरानी पर ध्यान

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के प्रकोप पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए।

कपास के उखेड़ा रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है, जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान : अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि फ्यूजेरियम विल्ट रोग विश्वभर में कपास की फसलों के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है। पहले यह रोग देसी कपास की

फसल में पाया जाता था, लेकिन अब देसी व नरमा कपास की दोनों फसलों में इस रोग ने विकराल रूप धारण कर लिया है। यह खोज कपास की खेती की सुरक्षा के लिए निगरानी और मजबूत प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। कृषि विशेषज्ञों ने रोग की सतत निगरानी, संक्रमण-प्रतिरोधी कपास किस्मों के उपयोग को अपनाने की सलाह दी है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	6.03.25	3	1-3

## हकृवि वैज्ञानिकों ने कपास के उखेड़ा रोग नए पैथोटाइप की पहली बार की पहचान



कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज वैज्ञानिकों की टीम के साथ।

हिसार, 5 मार्च (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने कपास फसल के लिए घातक फ्यूजेरियम विल्ट रोग (उखेड़ा रोग) के एक नए पैथोटाइप (रेस-1) की पहचान की है। देश में पहली बार कपास के उखेड़ा रोग की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

एल्सेवियर एक डच एकादमिक प्रकाशन कंपनी है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियोलॉजिकल एंड

मोलिकुलर प्लांट पैथोलोजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन में स्वीकार कर मान्यता दी है। जो विशेषता पौधों की बीमारियों के पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन प्रकाशित करती है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने कपास के उखेड़ा रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के

लिए स्वीकार किया है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि फ्यूजेरियम विल्ट रोग विश्वभर में कपास की फसलों के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है। पहले यह रोग देसी कपास की फसल में पाया जाता था, लेकिन अब देसी व नरमा कपास की दोनों फसलों में इस रोग ने विकराल रूप धारण कर लिया है।

यह खोज कपास की खेती की सुरक्षा के लिए निगरानी और मजबूत प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। उखेड़ा रोग के मुख्य शोधकर्ता डॉ. अनिल कुमार सैनी ने बताया कि शोधकर्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हुए हैं, जिससे भारतीय कपास उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। वैज्ञानिकों डॉ. अनिल कुमार, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. करमल सिंह, डॉ. सतीश कुमार सैन, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. अनिल जाखड़, डॉ. शिवानी मंधानिया, डॉ. शुभम लाम्बा व पीएचडी छात्र शुभम सैनी ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरिभूमि	6.03.25	9	4-8

## एचएयू के वैज्ञानिकों की उपलब्धि, रोग प्रबंधन पर काम हुआ शुरू

# कपास में नए उखेड़ा रोग पैथोटाइप की पहचान

हरिभूमि न्यूज || हिंसार

हकृवि के वैज्ञानिकों ने कपास फसल के लिए घातक फ्यूजेरियम विल्ट रोग (उखेड़ा रोग) के एक नए पैथोटाइप (रेस-1) की पहचान की है। देश में पहली बार कपास के उखेड़ा रोग की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

### एचएयू के वैज्ञानिक पहले शोधकर्ता

एल्सेवियर एक डच एकादमिक प्रकाशन कंपनी है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में



विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियोलॉजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलोजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन में स्वीकार कर मान्यता दी है। जो विशेषता पौधों की बीमारियों के पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन प्रकाशित करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक देश में

इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने कपास के उखेड़ा रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

**बीमारी के बाद निगरानी व उचित प्रबंधन है लक्ष्य**  
विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो.

### लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे : डॉ. सैनी

उखेड़ा रोग के मुख्य शोधकर्ता डॉ. अनिल कुमार सैनी ने बताया कि शोधकर्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हुए हैं, जिससे देश में कपास उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. अनिल कुमार, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. करमल सिंह, डॉ. सतीश कुमार सैन, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. अनिल जाखड़, डॉ. शिवानी मंधानिया, डॉ. शुभम लांबा व पीएचडी छात्र शुभम सैनी शामिल रहें।

### इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि फ्यूजेरियम विल्ट रोग विश्वभर में कपास की फसलों के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है। पहले यह रोग देसी कपास की फसल में पाया जाता था लेकिन अब देसी व नरमा कपास की दोनों फसलों में इस रोग ने विकराल रूप धारण कर लिया है। यह खोज कपास की खेती की सुरक्षा के लिए निगरानी और मजबूत प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। कृषि विशेषज्ञों ने रोग की सतत निगरानी, संक्रमण-प्रतिरोधी कपास किस्मों के उपयोग और मृदा स्वास्थ्य सुधार तकनीकों को अपनाने की सलाह दी है।

काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने

वैज्ञानिकों से बीमारी के प्रकोप पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। वैज्ञानिकों की रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आजीत समाचार	6.03.25	5	6-8

## एचएयू वैज्ञानिकों ने कपास के उखेड़ा रोग नए पैथोटाइप (वीसीजी 0111) की पहली बार की पहचान

हिसार, 5 मार्च (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने कपास फसल के लिए घातक फ्यूजेरियम विल्ट रोग (उखेड़ा रोग) के एक नए पैथोटाइप (रेस-1) की पहचान की है। देश में पहली बार कपास के उखेड़ा रोग की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

**अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन ने दी बीमारी को मान्यता, एचएयू के वैज्ञानिक हैं पहले शोधकर्ता :** एल्सेवियर एक डच एकादमिक प्रकाशन कंपनी है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियोलॉजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलोजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन में स्वीकार कर मान्यता दी है। जो विशेषता पौधों की बीमारियों के पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन प्रकाशित करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने कपास के उखेड़ा रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में

प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

बीमारी के बाद इसके प्रकोप की निगरानी व उचित प्रबंधन का हो लक्ष्य : प्रो. बी.आर. काम्बोज

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के प्रकोप पर कड़ी निगरानी रखने को कहा।

**इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान :** अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि फ्यूजेरियम विल्ट रोग विश्वभर में कपास की फसलों के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है। पहले यह रोग देसी कपास की फसल में पाया जाता था लेकिन अब देसी व नरमा कपास की दोनों फसलों में इस रोग ने विकराल रूप धारण कर लिया है। यह खोज कपास की खेती की सुरक्षा के लिए निगरानी और मजबूत प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। कृषि विशेषज्ञों ने रोग की सतत निगरानी, संक्रमण-प्रतिरोधी कपास किस्मों के उपयोग और मृदा स्वास्थ्य सुधार तकनीकों को अपनाने की सलाह दी है। उखेड़ा रोग के मुख्य शोधकर्ता डॉ. अनिल कुमार सैनी ने बताया कि शोधकर्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हुए हैं, जिससे भारतीय कपास उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिन्दू	6.03.25	6	6-8

एचएयू वैज्ञानिकों के शोध को अंतर्राष्ट्रीय स्तर के एल्सेवियर प्रकाशन ने दी मान्यता

## कपास के उखेड़ा रोग के नए पैथोटाइप की पहचान

हिसार, 5 मार्च (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने कपास फसल के लिए घातक फ्यूजेरियम विल्ट रोग (उखेड़ा रोग) के एक नए पैथोटाइप (रेस-1) की पहचान की है। देश में पहली बार कपास के उखेड़ा रोग की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर के एल्सेवियर प्रकाशन ने इस शोध को मान्यता दी है। एल्सेवियर एक डच एकादमिक प्रकाशन कंपनी है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी को खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि फ्यूजेरियम विल्ट रोग



हिसार में बुधवार को कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों की टीम के साथ। -हप्र

### कपास उत्पादन की सुरक्षा होगी सुनिश्चित

उखेड़ा रोग के मुख्य शोधकर्ता डॉ. अनिल कुमार सैनी ने बताया कि शोधकर्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हुए हैं, जिससे भारतीय कपास उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. अनिल कुमार, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. करमल सिंह, डॉ. सतीश कुमार सैन, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. अनिल जाखड़, डॉ. शिवानी मंधानिया, डॉ. शुभम लाम्बा व पीएचडी छात्र शुभम सैनी ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।

विश्वभर में कपास की फसलों के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है। पहले यह रोग देसी कपास की फसल में पाया जाता था लेकिन अब देसी व नरमा कपास की दोनों फसलों में इस रोग ने विकराल रूप धारण कर लिया है। यह खोज कपास की खेती की सुरक्षा के

लिए निगरानी और मजबूत प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। कृषि विशेषज्ञों ने रोग की सतत निगरानी, संक्रमण-प्रतिरोधी कपास किस्मों के उपयोग और मृदा स्वास्थ्य सुधार तकनीकों को अपनाने की सलाह दी है।





# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	6.03.25	5	6-8

## हकृवि में कल से दो दिवसीय 52वीं वार्षिक एथलेटिक्स मीट शुरू

हिसार, 5 मार्च (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गिरी सेंटर में 52वीं वार्षिक एथलेटिक्स मीट 6 व 7 मार्च को आयोजित की जाएगी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज 6 मार्च को प्रातः 10.00 बजे एथलेटिक्स मीट का शुभारंभ करेंगे। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशक एवं एथलेटिक्स मीट के आयोजक डॉ. मदन खीचड़ ने बताया कि इस खेलकूद प्रतियोगिता के आयोजन को लेकर सभी आवश्यक प्रबंध पूरे कर लिए गए हैं। प्रतियोगिता के सफल आयोजन को लेकर विभिन्न अधिकारियों की देखरेख में कमेटियां गठित की गई हैं। उन्होंने बताया कि एथलेटिक्स मीट में पुरुष एवं महिला वर्ग में रेस, डिस्कस थ्रो, लंबी कूद, ऊंची कूद, जैवलिन थ्रो, म्यूजिकल चेयर रेस सहित विभिन्न प्रकार के मुकाबले होंगे। उन्होंने बताया कि एथलेटिक्स मीट के समापन अवसर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के अधिकारी और खिलाड़ी मौजूद रहेंगे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिन क ज्ञान 21/2/20

दिनांक

6. 03. 25

पृष्ठ संख्या

4

कॉलम

1

## हकूवि में 52वीं वार्षिक एथलेटिक्स मीट आज से

जासं • हिसार: हिसार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गिरी सेंटर में 52वीं वार्षिक एथलेटिक्स मीट 6 व 7 मार्च को आयोजित की जाएगी। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज वीरवार को प्रातः 10 बजे एथलेटिक्स मीट का शुभारंभ करेंगे। छात्र कल्याण निदेशक एवं एथलेटिक्स मीट के आयोजक डा. मदन खीचड़ ने बताया कि इस खेलकूद प्रतियोगिता के आयोजन को लेकर प्रबंध कर लिए गए हैं। प्रतियोगिता के सफल आयोजन को लेकर विभिन्न अधिकारियों की देखरेख में कमेटियां गठित की गई हैं। उन्होंने बताया कि एथलेटिक्स मीट में रेस, डिस्कस थ्रो, लंबी कूद, ऊंची कूद, जैवलिन- थ्रो और म्यूजिकल चेयर रेस सहित विभिन्न प्रकार के मुकाबले होंगे। उन्होंने बताया कि एथलेटिक्स मीट के समापन के अवसर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	6.03.25	6	7-8

## दैनिक भास्कर

### एहतियात • कांगियारी के प्रकोप वाली फसल का बीज नहीं बनाएं गेहूं के खेत में कनकी-मंडूसी, जंगली जई को कटाई से पहले कर लें अलग

यशपाल सिंह | हिसार

गेहूं की बालों का रंग जब सुनहरा या ललाई लिए हो तो फसल को पकी समझें। ज्यादा पकने से दाने झड़ने का डर रहता है। खेत में खड़ी खरपतवार कनकी-मंडूसी, जंगली जई की कटाई पकने से 10-15 दिन पहले सावधानी से मुख्य फसल से अलग कर लें। इन फसलों की गहाई अच्छी तरह सूखने पर ही करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि जिन खेतों में पत्तों पर खुली कांगियारी का प्रकोप रहा हो उन खेतों के बीज को अगले वर्ष बिजाई के लिए प्रयोग में बिल्कुल भी न लाएं और रोगग्रस्त पौधों को जलाकर नष्ट कर दें। श्रेशर मशीन को समतल जमीन पर ही स्थापित करें, ताकि चलते समय कम से कम कम्पन हो। मशीन को चलाने से पहले हाथ द्वारा एक चक्कर लगा कर देख लें कि कहीं रुकावट तो नहीं है। श्रेशर मशीन के पहियों को जमीन में गाड़कर खूंटियां लगा दें और आवश्यकता हो तो फ्रेम पर भार/वजन आदि रखें। भूसे की निकासी हवा चलने की दिशा की ओर हो। श्रेशर को सही चक्करों पर ही चलाएं। श्रेशर सिलेंडर उसी दिशा में घूमना चाहिए जैसा कि निशान द्वारा दर्शाया गया हो, वरना पट्टे क्रॉस करके इसकी दिशा ठीक करनी चाहिए ताकि श्रेशर सही चक्करों पर ही चले।



गेहूं की फसल।

#### गेहूं कटाई में ये बातें सावधानी

- किसान अच्छी क्वालिटी के श्रेशर का ही प्रयोग करें।
- किसानों को थकान होने पर श्रेशर पर काम नहीं करना चाहिए।
- नशे की हालत में भी श्रेशर न चलाएं।
- खलिहान में हुक्का और बीड़ी-सिगरेट का कभी भी प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- काम करते समय ढीले कपड़े न पहनें।
- कम रोशनी में काम न करें। रात को काम करते समय रोशनी का प्रबंध रखें।
- गीली फसल की कटाई न करें।
- ट्रैक्टर के धुआं निकलने वाली पाइप के ऊपर चिंगारी अवरोधक अवश्य लगाएं।
- बिजली के खंभों व तारों के नीचे कभी भी फसल का ढेर न रखें।
- कुछ पानी और रेत श्रेशर के पास रखें, ताकि आग लगने पर काबू पाया जा सके।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Savera Times	06.03.25	--	--

## HAU Scientists discover new cotton wilt Pathotype, published by Elsevier

of The Savera Times

### Network

Hisar: Scientists of Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University have identified a new pathotype (Race-1) of Fusarium Wilt disease (Ukhra disease) which is fatal for cotton crop.

For the first time in the country, the disease of Ukhra disease of cotton has been detected. As per the instructions of the Vice Chancellor of the University, Prof. B.R. Kamboj, scientists have started work on management of this disease. Scientists are hopeful that they will soon succeed in this

direction as well.

International publication recognizes the disease, HAU scientists are the first researchers

Elsevier is a Dutch academic publishing company specializing in scientific, technical and medical content. In Physiological and Molecular Plant Pathology, scientists have accepted the report of this disease as the first research report and recognized it in the publication. It is one of the oldest international scientific organizations for the study of plant diseases and recognizes new diseases in plants. Scientists of Haryana



Vice Chancellor Prof. B.R. Kamboj with team of scientists.

Agricultural University are the first scientists to discover this disease in the country.

These scientists have presented a research report on the cotton wilt disease, which has been recognized by the organization at the international level and accepted

for publication in its journal.

The aim should be to monitor the outbreak and manage it properly after the disease has spread. Professor B.R. Kamboj

University Vice Chancellor Prof. B.R. Kamboj congratulated the scientists for this discovery. Prof. Kamboj said that in

the changing agricultural scenario, timely identification of emerging threats in various crops has become important. He asked the scientists to keep a close watch on disease outbreaks. Scientists should start working on disease control as soon as possible.

These scientists made important contributions

Research Director Dr. Rajbir Garg said that Fusarium Wilt disease remains a serious threat to cotton crops worldwide. Earlier this disease was found in the indigenous cotton crop but now this disease has taken a terrible form in both indigenous and soft cotton crops.

This discovery underlines the urgent need for surveillance and strong management strategies to protect cotton cultivation. Agricultural experts have advised continuous monitoring of the disease, use of infection-resistant cotton varieties and adoption

of soil health improvement techniques. Dr. Anil Kumar Saini, the main researcher of Ukhra disease, said that researchers are engaged in understanding the outbreak of this disease and developing targeted measures to reduce its impact, so that the safety of Indian cotton production can be ensured. HAU scientists Dr. Anil Kumar, Dr. Rakesh Kumar, Dr. Rajesh Kumar, Dr. Karanval Singh, Dr. Satish Kumar Saini, Dr. Kishore Kumar, Dr. Anil Jajhar, Dr. Shivani Mandharia, Dr. Shubham Lamba and PhD student Shubham Saini also contributed to this research work.



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	05.03.25	--	--

## एचएयू वैज्ञानिकों ने कपास के उखेड़ा रोग नए पैथोटाइप की पहली बार की पहचान

अंतरराष्ट्रीय स्तर के एल्सेवियर प्रकाशन ने दी मान्यता

सिटी पल्स न्यूज, हिंसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने कपास फसल के लिए घातक फ्यूजेरियम विल्ट रोग (उखेड़ा रोग) के एक नए पैथोटाइप (रेस-1) की पहचान की है। देश में पहली बार कपास के उखेड़ा रोग की बीमारी का पता चला है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन ने दी बीमारी को मान्यता, एचएयू के वैज्ञानिक हैं पहले शोधकर्ता

एल्सेवियर एक उच्च एकादमिक प्रकाशन कंपनी है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियोलॉजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलॉजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन में स्वीकार कर



मान्यता दी है। जो विशेषता पौधों की बीमारियों के पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने कपास के उखेड़ा रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है। बीमारी के बाद इसके प्रकोप की

निगरानी व उचित प्रबंधन का हो लक्ष्य - प्रो. काम्बोज

प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के प्रकोप पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि फ्यूजेरियम विल्ट रोग विश्वभर में कपास की फसलों के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है। पहले यह रोग देसी कपास की फसल में पाया जाता था लेकिन अब देसी व नरमा

कपास की दोनों फसलों में इस रोग ने विकराल रूप धारण कर लिया है। यह खोज कपास की खेती की सुरक्षा के लिए निगरानी और मजबूत प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. अनिल कुमार, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. करमल सिंह, डॉ. सतीश कुमार सैन, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. अनिल जाखड़, डॉ. शिवानी मंधानिया, डॉ. शुभम लाम्बा व पीएचडी छात्र शुभम सैनी ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

चिराग टाइम्स

5.03.2025

--

--

## एचएयू वैज्ञानिकों ने कपास के उखेड़ा रोग नए पैथोटाइप ( बीसीजी 0111 ) की पहली बार की पहचान

### अंतरराष्ट्रीय स्तर के एल्सेवियर प्रकाशन ने दी मान्यता

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार,। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने कपास फसल के लिए घातक फ्र्यूजेरियम विल्ट रोग (उखेड़ा रोग) के एक नए पैथोटाइप (रेस-1) की पहचान की है। देश में पहली बार कपास के उखेड़ा रोग की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे। अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन ने दी बीमारी को मान्यता, एचएयू के वैज्ञानिक हैं पहले

शोधकर्ता एल्सेवियर एक डच एकादमिक प्रकाशन कंपनी है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियॉलॉजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलॉजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन में स्वीकार कर मान्यता दी है। जो विशेषता पौधों की बीमारियों के पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से



एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन प्रकाशित करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने कपास के उखेड़ा रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है। बीमारी के बाद इसके प्रकोप की निगरानी व उचित प्रबंधन का हो लक्ष्य - प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान

महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के प्रकोप पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए। इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि फ्र्यूजेरियम विल्ट रोग विश्वभर में कपास की फसलों के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है। पहले यह रोग देसी कपास की फसल में पाया जाता था लेकिन अब देसी व नरमा कपास की दोनों फसलों में इस रोग ने विकराल रूप धारण कर लिया है। यह खोज कपास की खेती की सुरक्षा के लिए निगरानी और मजबूत प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। कृषि विशेषज्ञों ने रोग की सतत निगरानी,

संक्रमण-प्रतिरोधी कपास किस्मों के उपयोग और मृदा स्वास्थ्य सुधार तकनीकों को अपनाने की सलाह दी है।

उखेड़ा रोग के मुख्य शोधकर्ता डॉ. अनिल कुमार सैनी ने बताया कि शोधकर्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हुए हैं, जिससे भारतीय कपास उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. अनिल कुमार, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. करमल सिंह, डॉ. सतीश कुमार सैन, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. अनिल जाखड़, डॉ. शिवानी मंधानिया, डॉ. शुभम लाम्बा व पीएचडी छात्र शुभम सैनी ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

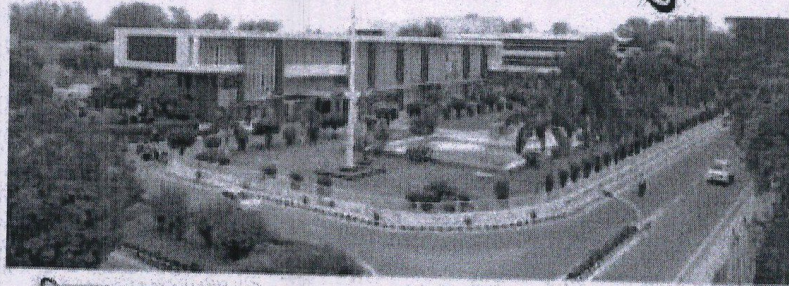
चिराग टाइम्स

5.03.2025

--

--

## हकृवि में कल से दो दिवसीय 52वीं वार्षिक एथलेटिक्स मीट शुरू



चिराग टाइम्स न्यूज  
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा  
कृषि विश्वविद्यालय के गिरी सेंटर में  
52वीं वार्षिक एथलेटिक्स मीट 6 व  
7 मार्च को आयोजित की जाएगी।  
विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.  
बी.आर. काम्बोज 6 मार्च को प्रातः  
10.00 बजे एथलेटिक्स मीट का  
शुभारंभ करेंगे।

यह जानकारी देते हुए  
विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण  
निदेशक एवं एथलेटिक्स मीट के  
आयोजक डॉ. मदन खीचड़ ने बताया  
कि इस खेलकूद प्रतियोगिता के  
आयोजन को लेकर सभी आवश्यक  
प्रबंध पूरे कर लिए गए हैं।

प्रतियोगिता के सफल आयोजन को  
लेकर विभिन्न अधिकारियों की  
देखरेख में कमेटियां गठित की गई  
हैं। उन्होंने बताया कि एथलेटिक्स  
मीट में पुरुष एवं महिला वर्ग में रेस,  
डिस्कस थ्रो, लंबी कूद, ऊंची कूद,  
जैवलिन थ्रो, म्यूजिकल चेंबर रेस  
सहित विभिन्न प्रकार के मुकाबले  
होंगे।

उन्होंने बताया कि एथलेटिक्स मीट  
के समापन अवसर पर उत्कृष्ट  
प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को  
मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कृत किया  
जाएगा। इस अवसर पर विभिन्न  
विभागों के अधिकारी और खिलाड़ी  
मौजूद रहेंगे।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

डेमोक्रेटिक फ्रंट

06.03.2025

--

--

## एचएयू वैज्ञानिकों ने कपास के उखेड़ा रोग नए पैथोटाइप की पहली बार की पहचान



### अंतरराष्ट्रीय स्तर के एल्सेवियर प्रकाशन ने दी मान्यता

डेमोक्रेटिक फ्रंट हिसार/पवन सैनी चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने कपास फसल के लिए घातक फ्यूजेरियम विल्ट रोग (उखेड़ा रोग) के एक नए पैथोटाइप (रेस-1) की पहचान की है। देश में पहली बार कपास के उखेड़ा रोग की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

एल्सेवियर एक डच एकादमिक प्रकाशन कंपनी है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियोलॉजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलोजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध

रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन में स्वीकार कर मान्यता दी है। जो विशेषता पीधों की बीमारियों के पीधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पीधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन प्रकाशित करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने कपास के उखेड़ा रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के प्रकोप पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि फ्यूजेरियम विल्ट रोग विश्वभर

में कपास की फसलों के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है। पहले यह रोग देसी कपास की फसल में पाया जाता था लेकिन अब देसी व नरमा कपास की दोनों फसलों में इस रोग ने विकराल रूप धारण कर लिया है। यह खोज कपास की खेती की सुरक्षा के लिए निगरानी और मजबूत प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। कृषि विशेषज्ञों ने रोग की सतत निगरानी, संक्रमण-प्रतिरोधी कपास किस्मों के उपयोग और मुदा स्वास्थ्य सुधार तकनीकों को अपनाने की सलाह दी है। उखेड़ा रोग के मुख्य शोधकर्ता डॉ. अनिल कुमार सैनी ने बताया कि शोधकर्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हुए हैं, जिससे भारतीय कपास उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. अनिल कुमार, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. करमल सिंह, डॉ. सतीश कुमार सैन, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. अनिल जाखड़, डॉ. शिवानी मंधानिया, डॉ. शुभम लाम्बा व पीएचडी छात्र शुभम सैनी ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।